अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2023) दिनांक : 20.12.2023

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

तेरापंथ का इतिहास–80

प्र. 1 किन्हीं सत्तरह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 17

आचार्य भिक्षु (कोई तेरह प्रश्नों के उत्तर दें)

(क) 1832 के लिखत में आचार्य भिक्षु ने किन दो सन्तों के लिए बहुमान-सूचक शब्दों का प्रयोग किया?

(ख) आचार्य भिक्षु और मुनि खंतिविजय जी की चर्चा का विषय क्या था?

(ग) सभा में मिश्र भाषा बोलने वाले के किस कर्म का बंध होता है?

(घ) आचार्य भिक्षु द्वारा रचित उपदेश ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?

(ङ) भगवान महावीर ने किस-किसकी संगति का निषेध किया है?

(च) आचार्य भिक्षु को रोटी देने वाले पर कहाँ और क्या प्रतिबन्ध लगाया गया?

(छ) आचार्य भिक्षु के अनुसार अपने निमित्त बनने वाले भवनों में रहने से साधु को क्यों और किस दोष का भागी होना पड़ता है?

(ज) स्वामीजी के शारीरिक शुभ लक्षणों का विवरण किसने लिखा और उसकी प्रतिलिपि किसने करवाई?

(झ) आचार्य भिक्षु के अनुसार–'अपने मकान में पौषध करने की आज्ञा देने वाले को धर्म होता है।' कैसे?

(ञ) आचार्य भिक्षु रचित '181 बोलां की हुंडी' में किसका संकलन है?

(ट) सन्त पुरूषों के सम्मुख अयुक्त बोलने तथा झगड़ने में कौन सी वीरता है? यह कथन किसने किससे कहा?

(ठ) स्वामीजी ने मुनि तिलोकचन्द जी को संघ से पृथक होते समय सचेत करते हुए क्या कहा?

(ड) आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित किन्हीं दो थोकड़ों के नाम लिखें।

(ढ) कचरोजी के अति आग्रह करने पर स्वामीजी ने उनसे कौन सा प्रश्न पूछा?

(ण) 'आपने हमारी मर्यादा से ही हमें असाधु सिद्ध कर दिया।' यह कथन किसने, किससे और क्यों कहे?

आचार्य भारमल जी (कोई चार प्रश्नों का उत्तर दें)

(त) द्रोणाचार्य के अनुसार साधु को निराहार रहकर स्थिति का सामना कब करना चाहिए?

(थ) आचार्य भारमल जी अपने 'अनबींधे कानों' का क्या कारण बताते?

(द) मुनि भारमल जी ने कितने पद्य-प्रमाण ग्रन्थों की प्रतिलिपि की थी?

(ध) आचार्य भारमल जी के शासनकाल में कितने साधु-साध्वियां दीक्षित हुए?

(न) आचार्य भारमल जी ने आचार्य काल में सर्वाधिक चातुर्मास कहाँ-कहाँ व कितने किए?

प्र. 2 किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 15

आचार्य भिक्षु (किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें)

(क) 'एक मुहूर्त्त का संवर कर ले।' स्वामीजी ने ऐसा किससे और क्यों कहा?

(ख) 'जो परीषह सहने में असमर्थ होते हैं, वे ही वस्त्र रखते हैं।' स्वामीजी ने इस चर्चा का सारगर्भित उत्तर क्या दिया? लिखें।

(ग) 'जो महापुरूष होते हैं, वे तो अब भी खाते हैं।' स्वामीजी के इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

(घ) पुण्य से प्राप्त सुख व्यक्ति को भोग की ओर ले जाते हैं। अतः उनसे बचने की प्रेरणा देते हुए आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ङ) आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदप्त रूपक द्वारा स्पष्ट करें कि सुगुरूवेशी कुगुरू का संपर्क अधिक दुष्परिणामी होता है।

(च) 'हम कार्तिक के ज्योतिषी हैं, आषाढ़ के नहीं।' आचार्य भिक्षु के इस कथन को स्पष्ट करें।

आचार्य भारमल जी (कोई दो प्रश्नों का उत्तर दें)

(छ) बालमुनि रायचन्द जी द्वारा दशाश्रुत-स्कंध सूत्र का लिखना प्रारम्भ और आचार्य भारमल जी द्वारा पूर्ण करने का सम्पूर्ण घटनाक्रम लिखें।

(ज) 'मैं मेवाड़ का भी हूं और मारवाड़ का भी हूं।' आचार्य भारमल जी के इस कथन को स्पष्ट करें।

(झ) आचार्य भारमल के उदयपुर से निष्कासन के बाद महाराणा अत्यन्त निराश और चिन्ताग्रस्त क्यों रहने लगे?

प्र. 3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 12

(क) घटना प्रसंग से स्पष्ट करें कि स्वामीजी के समय में आहार की उपलब्धि में कितनी बाधाएं रहा करती थी।

(ख) किन्हीं तीन घटनाओं से संक्षेप में स्पष्ट करें कि स्वामीजी स्पष्टवादी व्यक्ति थे।

(ग) स्वामीजी द्वारा प्रदत्त अन्तिम-हित शिक्षाओं का उल्लेख करें।

प्र. 4 आचार्य भिक्षु की साहित्य साधना का उल्लेख करें। 15

अथवा

घटना प्रसंगों से स्पष्ट करें कि आचार्य भिक्षु के कथन में कभी-कभी गहरा व्यंग्य भी होता था।

प्र. 5 आचार-संहिता पर टिप्पणी लिखें। 6

अथवा

'किशनगढ़ में शास्त्रार्थ' पर टिप्पणी लिखें।

प्र. 6 आचार्य भारमलजी के जीवन के अन्तिम चरण व महाप्रयाण का उल्लेख करें। 15

अथवा

सिद्ध करें कि आचार्य भारमल जी कुशल धर्म प्रचारक तथा सुदृढ़ अनुशासक थे।

तेरापंथ-प्रबोध–20

प्र. 7 किन्हीं तीन पद्यों की पूर्ति करें– 8

(क) मरूधर स्यूं.....निस्तार हो।।

(ख) धम्मगिरी.....एक बार हो।।

(ग) दोरी लागी.....संस्कार हो।।

(घ) एक हुवै.....स्वेच्छाचार हो।।

(ङ) तेरा मा.....विस्तार हो।।

प्र. 8 किन्हीं तीन पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 12

(क) 'सार्वभौम सिद्धान्त घोषणा' वाला पद्य।

(ख) 'वन्दना लो झेलो, भक्तां री भगवान' गीत वाला पद्य।

(ग) 'रूं रूं में सांवरियो बसियो' गीत वाला पद्य।

(घ) 'तीन-तीरथ' वाला पद्य।